सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए ''केंद्रित'' "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

आंचलिक कार्यालय, लखनऊ

सेंट साकेत ई-पत्रिका

अंक- 8 (मार्च 2022)

*केवल आंतरिक परिचालन हेतु

अंचल प्रमुख का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियों,

लखनऊ अंचल की त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका 'सेंट साकेत' का मार्च 2022 अंक प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। साथियों विगत वित्त वर्ष 2021-22 के दौरान तमाम विषम परिस्थितियों से जूझते हुए भी हमारे बैंक ने समग्र रूप से बेहतर कार्य निष्पादन किया है। परिणामस्वरूप हमारे प्रिय बैंक ने विगत वित्त वर्ष के अंतर्गत 1045 करोड़ का शुद्ध लाभ अर्जित किया है जिसके परिणाम स्वरूप स्टाफ सदस्यों को 15 दिन का पी एल आई दिया गया । हमारे अंचल ने भी पिछले वित्तीय वर्ष में अच्छी प्रगति की है एवं 31 मार्च 2022 को हमारे अंचल का कुल व्यवसाय बढ़कर 51581करोड़ रूपये हो गया है एवं कुल जमायें 40305 करोड़ रूपये , कुल अग्रिम 11276 करोड़ रूपये हो गया है इसके लिए सभी सेंट्रलाइट साथियों को बहुत बहुत बधाई।

हम नए वित्त वर्ष 2022-23 में प्रवेश कर चुके हैं। वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए हमारे समक्ष बैंकिंग क्षेत्र की नित नई चुनौतियां भी सामने आ रही हैं। हमें इन चुनौतियों का सामना करते हुए कार्य करना होगा एवं अपने प्रयासों से बैंक के व्यवसाय एवं लाभप्रदता में वृद्धि को सुनिश्चित करना होगा। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारी प्रत्येक शाखा एक लाभप्रद इकाई के रूप में कार्य करे। इसके लिए हमें सर्वप्रथम अपनी ग्राहक सेवा बेहतर करते हुए नए विशिष्ट ग्राहक जोड़ने होंगे। साथ ही पुराने मूल्यवान ग्राहक जो किसी न किसी कारण से हमारे बैंक से विमुख होकर अन्य किसी बैंक से जुड़ गए हैं, उन्हें विश्वास दिलाकर वापस अपने बैंक से जोड़ने का प्रयास करना होगा।

हमें बैंक के ऋण पोर्टफोलियो में वृद्धि करनी होगी। इसके लिए रिटेल, कृषि और एमएसएमई पर विशेष ध्यान देकर शाखाओं के ऋण जमा अनुपात में पर्याप्त सुधार करना होगा। साथ ही कुल एनपीए में कमी लाने के पूर्ण प्रयास करने होंगे। खातों को स्लीपेज से रोकना होगा और केसीसी ऋणों के नवीनीकरण पर विशेष ध्यान देना होगा। बैंक की लाभप्रदता में वृद्धि हेतु हमें गैर- ब्याज आय में भी उल्लेखनीय वृद्धि के हर संभव प्रयास करने होंगे। कृपया ध्यान दें कि हमें वह सब प्रयास करने होंगे जिससे बैंक के व्यवसाय एवं लाभप्रदता में वृद्धि सुनिश्चित की जा सके।

आपको डिजिटल उत्पादों यथा सेंट मोबाइल, नेट बैंकिंग, एम-पासबुक, यूपीआई इत्यादि का भरपूर प्रचार-प्रसार करते हुए इनको अधिकाधिक सक्रिय करना होगा, जिससे शाखा में आने वाले ग्राहकों की भीड़ कम की जा सकेगी। साथ ही शाखा में होने वाली गतिविधियों पर भी पैनी नजर बनाये रखनी है ताकि धोखाधडी के मामलों से बचा जा सके । सभी जनधन के पात्र खातों के खाताधारकों को प्रधान मंत्री सुरक्षा बीमा योजना , प्रधान मंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना एवं अटल पेंशन योजना के अन्तर्गत 100 प्रतिशत पंजीकरण किया जाना है ।

हमारा देश आजादी का अमृत महोत्सव वर्ष मना रहा है। इसके अंतर्गत हमारे बैंक में भी विविध कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। हम सबका प्रयास होना चाहिए कि हम इस पुनीत कार्य में शत-प्रतिशत सहभागी बनें।

तदनुसार, मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम सब सेन्ट्रलाइट अपने प्रयासों में अवश्य सफल होंगे।

शुभकामनाओं सहित,

(एस .के .गुप्ता)

अंचल प्रमुख

उप अंचल प्रमुख का संदेश

प्रिय सेंट्रलाइट साथियो,

सर्व प्रथम मैं आप सभी को परिवार सहित "75 वां आज़ादी का अमृत महोत्सव" के काल में बधाई और शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ, साथ ही मुझे अंचल की ई-गृह पत्रिका "सेंट साकेत" के मार्च 2022 अंक के माध्यम से परस्पर संबाद स्थापित करते हुए अत्यंत ही हर्ष का अनुभव हो रहा है.

कोरोना काल ने हमारे जीवन को अकल्पनीय रूप से प्रभावित किया है. मुझे गर्व है कि आप सभी सेन्ट्रलाइट ने कोरोना योद्धा के रूप में निरंतर निःस्वार्थ बैंकिंग सेवाओं को देकर देशवासियों के बैंकिंग जीवन को सरल किया है. मित्रों इस शुभ अवसर पर मैं बताना चहता हूँ कि गत मार्च 2022 में हमारे अंचल ने बैंकिंग व्यवसाय के सभी क्षेत्रों में बहुत ही उत्साहवर्धक कार्य किया है. आप सभी का बैंक एवं समाज के प्रति की गई निस्वार्थ सेवा को सुनिश्चित करने के लिए, अंचल के समस्त सदस्यों को बधाई देता हूँ. मुझे पूर्ण विश्वास है कि आगे भी हम बैंक के ग्राहकों को इसी प्रकार से सेवा देते रहेंगे.

आप सभी को विदित है कि हमारे अंचल के अंतर्गत 11 क्षेत्रीय कार्यालय और 554 शाखाओं का समृद्ध जाल पूरे उत्तर प्रदेश में फैला हुआ है. आप सभी मुझसे एकमत होंगे कि एक संतुष्ट ग्राहक ही हमारे बैंक का स्टार प्रचारक होता है. वह अपने साथ अन्य समृद्ध ग्राहकों को भी बैंक से जोड़ता है. निःसंदेह नये एवं युवा ग्राहकों की अपेक्षाओं का स्तर भी हमसे बढ गया है. आज की पीढ़ी तकनीकी के उपयोग को भली भांति करती है और अपेक्षा करती है कि उसका बैंकिंग का कार्य घर बैठे ही तकनीकी अथवा डिजिटल माध्यम से शीघ्र हो. साथ ही हमारे बैंक ने अनुपम निम्नलिखित डिजिटल बैंकिंग और कैशलेस बैंकिंग के प्रयोग के लिये प्रेरित किया है: इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग- व्यक्तिगत एवं कॉर्पोरेट, क्रेडिट/ डेबिट / एटीएम कार्ड, एम – पासबुक, एनईएफटी और आरटीजीएस आदि. इस तरह से हमारा बैंक व्यावसायिक बैंकिंग के सभी क्षेत्रों में तकनीकी के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ रहा है.

मेरा तो मानना है कि शाखाओं को मात्र गतिविधिओं या विक्रय के केन्द्र के रूप में नहीं देखना चाहिए, वरन शाखायें - सीडी अनुपात में सुधार करें , ब्याज और गैर ब्याज आय में वृद्धि करे और शाखा स्वयं ही एक लाभ अर्जित करनेवाली ईकाई बनने में समर्थ होनी चाहिए.
साथियों, पत्रिका के माध्यम से मैं यह आह्वान करना चाहता हूँ कि हम और अधिक उत्साह और ऊर्जा के साथ ,वर्तमान वित्तीयवर्ष में कार्य करते हुए उच्च प्रबन्धन के अभियानों को सफल बनायेंगे. सभी पैरामीटर पर अपने अंचल को सर्वोच्च रखेंगे.

शुभकामनाओं के साथ,

(अजीत सिंह **)**
उप अंचल प्रमुख

सम्पादकीय

मेरे प्रिय सेंट्रलाइट साथियों,

हमारे लखनऊ अंचल की तिमाही ई पत्रिका 'सेंट साकेत' के माध्यम से आपसे सम्पर्क करते हुए हर्ष हो रहा है. यह पत्रिका अंचल की बैंकिंग और सांस्कृतिक गतिविधियों की झलक प्रस्तुत करती है. लखनऊ अंचल में क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा मार्च 2022 तिमाही में हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया एवं राजभाषा प्रदर्शनी _लगाई गईं।

वर्तमान समय में ग्राहकों को डिजिटल बैंकिंग का फायदा मिल रहा है और वह शाखा में बिना आए एटीएम से धन निकासी कर सकते हैं. अतः हमें सभी ग्राहकों को इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग आदि के प्रयोग के लिए प्रेरित करना चाहिए.

बैंकिंग एक ऐसा सेवा क्षेत्र है जहां भाषा के माध्यम से व्यवसाय में तीव्र गति मिल सकती है. अतः हमें ग्राहकों की भाषा अर्थात हिंदी में अपने सभी उत्पादों की जानकारी ग्राहकों तक पहुंचाए. विगत अंकों की भांति इस पत्रिका का वर्तमान अंक निश्चित रूप से ज्ञानवर्धक और रोचक है. इस पत्रिका को बेहतर बनाने के लिए आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं.

सादर,

(संजय गुप्ता)
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

संरक्षक

श्री एस. के. गुप्ता, अंचल प्रमुख

परामर्शदाता

श्री अजीत सिंह , उप अंचल प्रमुख
श्री अजय कुमार खन्ना , क्षेत्रीय प्रमुख , क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ
श्री एम. के. गोसाई, सहायक महाप्रबंधक
श्री अनिल मीलू, सहायक महाप्रबंधक
श्री एस. एस. सहाय, सहायक महाप्रबंधक

सम्पादक

संजय गुप्ता
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
मोबाइल नम्बर 9962058300

आप 'सेंट साकेत' में प्रकाशनार्थ अपनी रचनाएं hindiluckzo@centralbank.co.in पर भेज सकते है. ये रचनाएं बैंकिंग, राजभाषा हिंदी आदि विषयों सहित संस्मरण, कहानी, कविता, कार्टून आदि हो सकते हैं . बैंकिंग संबंधी समारोह, कार्यक्रम की संक्षिप्त रिपोर्ट के साथ उस अवसर के एक या दो फोटो भी भेजे जा सकते हैं ताकि उन्हें 'सेंट साकेत' में प्रकाशित किया जा सके.

संपर्क सूत्र
राजभाषा कक्ष
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया
आंचलिक कार्यालय
73, महात्मा गांधी मार्ग, हजरतगंज
लखनऊ - 226 001

संरक्षक

श्री एस.के गुप्ता, अंचल प्रमुख

संपादक

संजय गुप्ता
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
मोबाइल नम्बर 9962058300

आप 'सेट साकेत' में प्रकाशनार्थ अपनी रचनाएं मेल आई. डी: hindiluckzo@centralbank.co.in पर भेज सकते है. ये रचनाएं बैकिंग, राजभाषा हिंदी आदि विषयों सहित संस्मरण, कहानी, कविता, कार्टून आदि हो सकते हैं . बैकिंग संबंधी समारोह, कार्यक्रम की संक्षिप्त रिपोर्ट के साथ उस अवसर के एक या दो फोटो भी भेजे जा सकते हैं . ताकि उन्हें 'सेंट साकेत' में प्रकाशित किया जा सके.

संपर्क सूत्र

राजभाषा कक्ष
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया
आंचलिक कार्यालय
73, महात्मा गांधी मार्ग, हजरतगंज
लखनऊ - 226 001

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
01.	आजादी के अमृत महोत्सव की गतिविधियाँ – लखनऊ अंचल	8-14
02.	जल संरक्षण – लेख	15-18
03.	प्रतिभा पलायन – लेख	19-20
04.	महिला सशक्तिकरण – लेख	21-23
05.	वक्त क्या दिखाएगा अब? देखा जाएगा – कविता	25
06.	लखनऊ अंचल की व्यावसायिक स्थिति	26
07.	लखनऊ अंचल में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस	28-29
08.	मेरठ क्षेत्र की पत्रिका "सेंट मंगल " को द्वितीय पुरस्कार	30
09.	गाँव की जिंदगी- कविता	31
10.	आओ! अपनी हिंदी भाषा को प्रभावशाली बनाए	32-33
11.	क्षेत्रीय कार्यालय इटावा की राजभाषा प्रदर्शनी	34
12.	स्वर्ग- कहानी	35-36
13.	उमंग- चुटकुले	37
14.	हमें क्या कहेंगे लोग –कविता	38-39
15.	आजादी का अमृत महोत्सव– लेख	40

इस अंक में प्रकाशित लेखों, रचनाओं के विचार, लेखकों, रचनाकारों के स्वयं के हैं, उनसे संपादक, परामर्शदाता, मंडल, प्रकाशक, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

आजादी का अमृत महोत्सव
क्षेत्रीय कार्यालय , लखनऊ

आजादी के अमृत महोत्सव के अर्न्तगत ,अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय ,लखनऊ द्वारा रोड शो का आयोजन किया गया ओर नारी शक्ति रथ चलाया गया । चित्र में , श्री एस. के. गुप्ता, अंचल प्रमुख आंचलिक कार्यालय लखनऊ , श्री अजीत सिंह , उप अंचल प्रमुख, आंचलिक कार्यालय ,लखनऊ एवं श्री अजय कुमार खन्ना , क्षेत्रीय प्रमुख , क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ एवं अन्य कार्यपालक एवं स्टॉफ सदस्य परिलक्षित हैं ।

क्षेत्रीय कार्यालय, **देवरिया में मार्च, 2022 तिमाही में आयोजित विभिन्न** अवसरों पर आयोजित कार्यक्रम के फोटो विवरण सहित

फोटो का विवरण	फोटो का विवरण
आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत दि.24.01.2022 को राष्ट्रीय बेटी दिवस के अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय, देवरिया के राजभाषा विभाग द्वारा स्टाफ सदस्यों की बेटियों संग सेल्फी पर एक वीडियो का प्रकाशन किया गया.	दि.26.01.2022 को गणतंत्र दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए श्री सुशील कुमार उपाध्याय, क्षेत्रीय प्रबंधक. उक्त अवसर पर श्री मनोज सिन्हा, मु.प्र., श्री आर.एस. राय, मु.प्र. श्री राकेश कुमार, व.प्र., सुश्री आकृति व अन्य अधिकारी एवं कर्मचारीगण भी मौजूद रहे.
दि. 15-31 जनवरी, 2022 तक स्वच्छता पखवाड़ा के अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय, देवरिया के अधिकारी एवं कर्मचारियों को स्वच्छता की शपथ दिलाते हुए श्री सुशील कुमार उपध्याय, क्षेत्रीय प्रबंधक. साथ में श्री मनोज सिन्हा, श्री आर.एस. राय, मु.प्र. व क्षेत्रीय कार्यालय के अन्य अधिकारी कर्मचारी गण.	दि.07.03.2022 को सेंट ग्रामीण स्वरोजगार के प्रशिक्षण संस्थान, देवरिया के नव निर्मित भवन में प्रशिक्षण सत्र का शुभारम्भ करते हुए श्री शिव कुमार गुप्ता, माननीय फील्ड महाप्रबंधक, आंचलिक कार्यालय, लखनऊ. साथ में श्री सुशील कुमार उपाध्याय, क्षेत्रीय प्रबंधक, श्री मनोज सिन्हा, श्री राकेश कुमार, जिला अग्रणी प्रबंधक एवं निदेशक आर.सेटी, देवरिया आदि.

दि. 07.03.2022 को श्री शिव कुमार गुप्ता, फील्ड महाप्रबंधक, आंचलिक कार्यालय, लखनऊ के देवरिया आगमन पर श्री सुशील कुमार उपाध्याय, क्षेत्रीय प्रबंधक, श्री मनोज सिन्हा, मु.प्र., श्री वी.के. श्रीवास्तव, स.प्र., श्रीमती रजनी कुमरी, व.प्र., सुश्री शुभ लक्ष्मी शर्मा, राजभाषा अधिकारी, श्री राकेश कुमार, व.प्र. आदि नारी शक्ति रथ को हरी झंडी दिखा कर रवाना करते हुए.

दि. 08.03.2022 को अंतराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय, देवरिया में श्री मनोज सिन्हा, मुख्य प्रबंधक की अध्यक्षता में क्षेत्र की सभी महिला सेंट्रलाइट अधिकारियों कर्मचारियों ने मिल कर केक काट कर मनाया. इस अवसर पर श्री राकेश कुमार, अग्रणी जिला प्रबंधक, देवरिया, श्रीमती रजनी कुमारी, व.प्र., नीलम कुमारी, तबीबा तस्कीन, स.प्र.,पुष्पा विश्वकर्मा,स.प्र.,आकृति बक्शी आदि शामिल रहे.

दि.15.02.2022 को महाप्रबंधक रिटेल एवं कंज्यूमर लेंडिंग, केंद्रीय कार्यालय, मुम्बई, श्रीमती नमिता रॉय शर्मा की महती उपस्थिति में श्री सुशील कुमार उपाध्याय, क्षेत्रीय प्रबंधक, श्री मनोज सिन्हा, मुख्य प्रबंधक, श्री आर.एस. राय, मु.प्र., श्री राकेश कुमार, व..प्र., श्रीमती रजनी कुमारी, व.प्र. एवं सुश्री शुभ लक्ष्मी शर्मा, राजभाषा अधिकारी, पत्रिका **"सेंट देव वाणी के राजभाषा एवं आज़ादी का अमृत महोत्सव विशेषांक"** का विमोचन करते हुए.

दि. 07.03.2022 को श्री शिव प्रकाश गुप्ता, फील्ड महाप्रबंधक, आंचलिक कार्यालय, लखनऊ के देवरिया आगमन पर श्री सुशील कुमार उपाध्याय, क्षेत्रीय प्रबंधक, श्री मनोज सिन्हा, मुख्य प्रबंधक, श्री आर.के. पांडेय, जिला अग्रणी प्रबंधक, बलिया एवं सुश्री शुभ लक्ष्मी शर्मा, राजभाषा अधिकारी, **राजभाषा एवं सूक्ति संदेश सम्बंधित पोस्टर** का विमोचन करते हुए.

सतर्कता जागरुकता अभियान के दौरान केंद्रीय कार्यालय द्वारा आयोजित क्विज प्रतियोगिता में श्री वी.के. श्रीवास्तव, सहायक प्रबंधक, ने आंचलिक कार्यालय स्तर पर विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त की जिसका प्रमाण पत्र दि. 07.03.2022 को प्रदान करते हुए श्री शिव कुमार गुप्ता, फील्ड महाप्रबंधक, आंचलिक कार्यालय, लखनऊ. साथ में मंचासीन श्री सुशील कुमार उपाध्याय, क्षेत्रीय प्रबंधक एवं श्री मनोज सिन्हा, मु.प्रबंधक.

दि. 07.03.2022 को आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत ग्राम पुरुषोत्तमपुर, देवरिया में नि:शुल्क पशुधन चिकित्सा शिविर में श्री शिव कुमार गुप्ता, फील्ड महाप्रबंधक, आंचलिक कार्यालय, लखनऊ ग्रामीणवासियों को नि:शुल्क दवायें वितरित करते हुए. मंचासीन हैं श्री सुशील कुमार उपाध्याय, क्षेत्रीय प्रबंधक, श्री मनोज सिन्हा, मु.प्र., श्री राकेश कुमार, अग्रणी जिला प्रबंधक, देवरिया, श्री आर.के. पांडेय, अग्रणी जिला प्रबंधक, बलिया, देवरिया, पशु विशेषज्ञ डॉक्टर व अन्य.

दि.05.02.2022 को सेंट ग्रामीण स्वरोजगार के प्रशिक्षण संस्थान, देवरिया के नव निर्मित प्रशिक्षण भवन के उद्घाटन कार्यक्रम में श्री आशुतोष निरंजन, (आईएएस), श्री रविंद्र कुमार, मुख्य विकास अधिकारी, जिलाधिकारी देवरिया, श्री सुशील कुमार उपाध्याय, क्षेत्रीय प्रबंधक व अन्य.

दि.07.03.2022 को सेंट ग्रामीण स्वरोजगार के प्रशिक्षण संस्थान, देवरिया के नव निर्मित भवन में पौधारोपण करते हुए श्री शिव कुमार गुप्ता, माननीय फील्ड महाप्रबंधक, आंचलिक कार्यालय, लखनऊ, श्री सुशील कुमार उपाध्याय, क्षेत्रीय प्रबंधक, श्री मनोज सिन्हा, मु.प्र. आदि.

क्षेत्रीय कार्यालय, **गोरखपुर में मार्च, 2022 तिमाही में आयोजित विभिन्न** अवसरों पर आयोजित कार्यक्रम के फोटो विवरण सहित

फोटो का विवरण	फोटो का विवरण
आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत दि.24.01.2022 को राष्ट्रीय बेटी दिवस के अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर के राजभाषा विभाग द्वारा स्टाफ सदस्यों की बेटियों संग सेल्फी पर एक वीडियो का प्रकाशन किया गया.	दि.26.01.2022 को गणतंत्र दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए श्री एल.बी. झा, क्षेत्रीय प्रबंधक व अन्य अधिकारी एवं कर्मचारीगण.
दि. 15-31 जनवरी, 2022 तक स्वच्छता पखवाड़ा के अवसर पर स्वच्छता की शपथ लेते हुए क्षेत्रीय कार्यालय गोरखपुर के अधिकारी एवं कर्मचारीगण	दि.05.02.2022 को क्षेत्रीय प्रबंधक महोदय की अध्यक्षता में राजभाषा कक्ष द्वारा पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें स्थानीय शाखा प्रबंधकगण भी शामिल हुए.

दि.08.03.2022 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर गोरखनाथ मंदिर परिसर से **नारी शक्ति रथ** को हरी झंडी दिखा कर रवाना करते हुए श्री शिव कुमार गुप्ता, फील्ड महाप्रबंधक, आंचलिक कार्यालय, लखनऊ, श्री राजेश गेड़ा, सहायक महाप्रबंधक ऑडिट, आंचलिक लेखा कार्यालय, कोलकाता, श्री एल.बी. झा, क्षेत्रीय प्रबंधक, एवं श्री डी.के. सिंह, व.प्र.

दि. 08.03.2022 को अंतराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर सेंट आर.सेटी, कुशीनगर की प्रशिक्षित महिलाओं को सम्मान करने के उपरांत **श्री शिव कुमार गुप्ता**, **फील्ड महाप्रबंधक**, **आंचलिक कार्यालय**, **लखनऊ**, श्री राजेश गेड़ा, सहायक महाप्रबंधक ऑडिट, आंचलिक लेखा कार्यालय, कोलकाता, श्री एल.बी. झा, क्षेत्रीय प्रबंधक, श्री भुवनेश्वर नाथ पांडेय, पर्यावरणविद, श्री आर.एन. यादव, निदेशक, आर.सेटी, कुशीनगर, श्री परविंदर सिंह भाटिया, मुख्य प्रबंधक, सुश्री शुभ लक्ष्मी शर्मा, राजभाषा अधिकारी.

दि.14.02.2022 को महाप्रबंधक रिटेल एवं कंज्यूमर लेंडिंग, केंद्रीय कार्यालय, मुम्बई, श्रीमती नमिता रॉय शर्मा की महती उपस्थिति में श्री एल.बी. झा, क्षेत्रीय प्रबंधक, श्री विनोद तिवारी, मुख्य प्रबंधक, श्री परविंदर सिंह भाटिया, मु.प्र., श्री मनोज सिन्हा, मु.प्र., श्री शिवेश कुमार, मु.प्र., श्री संदीप जायसवाल, व.प्र. एवं सुश्री शुभ लक्ष्मी शर्मा, राजभाषा अधिकारी, पत्रिका **"सेंट गोरखधाम के राजभाषा एवं आज़ादी का अमृत महोत्सव विशेषांक"** का विमोचन.

दि. 08.03.2022 को श्री शिव कुमार गुप्ता, फील्ड महाप्रबंधक, आंचलिक कार्यालय, लखनऊ के गोरखपुर आगमन पर श्री राजेश गेड़ा, सहायक महाप्रबंधक ऑडिट, आंचलिक लेखा कार्यालय कोलकाता, श्री भुवनेश्वर नाथ पांडेय, पर्यावरणविद, सुश्री शुभलक्ष्मी शर्मा, राजभाषा अधिकारी, श्री आर.एन. यादव, श्री पी.एस. भाटिया, मुख्य प्रबंधक, **राजभाषा एवं सूक्ति संदेश सम्बंधित पोस्टर** का विमोचन करते हुए.

दि. 15-16 मार्च, 2022 को श्री राजेश गेड़ा, सहायक महाप्रबंधक ऑडिट की महती उपस्थिति में श्री एल.बी.झा, क्षेत्रीय प्रबंधक की अध्यक्षता में श्री विनोद कुमार तिवारी, मुख्य प्रबंधक, श्री परविंदर सिंह भाटिया, मुख्य प्रबंधक एवं सुश्री शुभ लक्ष्मी शर्मा, राजभाषा अधिकारी, **राजभाषा एवं पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए.**

दि. 05.02.2022 को क्षेत्रीय प्रबंधक महोदय द्वारा **अखिल भारतीय निबंध लेखन प्रतियोगिता** के **आंचलिक कार्यालय स्तर पर प्रथम स्थान** प्राप्त श्री सृजन श्रीवास्तव, शाखा मानीराम को श्री स्मृतिरंजन दास, महाप्रबंधक (राजभाषा) के हस्ताक्षर से प्राप्त प्रशंसापत्र प्रदान करते हुए श्री एल.बी. झा, क्षेत्रीय प्रबंधक.

दि.08.03.2022 को सेंट ग्रामीण स्वरोजगार के प्रशिक्षण संस्थान, कुशीनगर के नव निर्मित भवन का औपचारिक उद्घाटन करते हुए श्री शिव कुमार गुप्ता, माननीय फील्ड महाप्रबंधक, आंचलिक कार्यालय, लखनऊ. साथ में श्री एल.बी. झा, क्षेत्रीय प्रबंधक, श्री राजेश गेड़ा, सहायक महाप्रबंधक, आंचलिक लेखा कार्यालय, कोलकाता, श्री परविंदर सिंह भाटिया, मु.प्र., श्री आर.एन. यादव, निदेशक आर.सेटी., सुश्री शुभ लक्ष्मी शर्मा, राजभाषा अधिकारी व सभी शाखाओं के शाखा प्रबंधक आदि.

दि. 31.03.2022 को केन्द्रीय कार्यालय द्वारा आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान राजभाषा अधिकारी सुश्री शुभ लक्ष्मी शर्मा को वर्ष 2021 के दौरान भारत सरकार की राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन में प्रदत्त अनुकरणीय योगदान के लिये श्रेष्ठ राजभाषा अधिकारी पुरस्कार एवं माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी द्वारा हस्ताक्षरित प्रशस्तिपत्र प्रदान करते हुए श्री एल.बी. झा, क्षेत्रीय प्रबंधक.

जल संरक्षण

धरती पर समस्त जीवन चक्र को बनाए रखने के लिए हवा, पानी और भोजन बहुत ही जरूरी है। जिसमें से जल प्रकृति की अनमोल धरोहर है बिना जल के इस धरती पर जीवन का होना संभव नहीं है। जल की एक-एक बूँद सभी के लिए बहुत ही कीमती है। जीवन के लिए जल बहुत ही महत्वपूर्ण है । इसीलिए पानी को बचाना हमारे लिए सबसे उपयोगी है . पृथ्वी का अधिकतम भाग जल से घिरा हुआ है पर इसमें से उपयोग करने के लिए पानी बहुत ही कम है इसलिए जल का संरक्षण बहुत ही जरूरी है ।

धरती पर वैसे तो जल का भंडारण बहुत ही अधिक है अगर हम जल की बात करें तो पूरी पृथ्वी का 70% भाग जल से भरा हुआ है पर इस 70% भाग में से केवल 1% भाग सभी के लिए उपयोगी है और इस 1% भाग में से केवल 1% भाग पीने के योग्य है।

इसीलिए सभी को बहुत ही सोच समझ के साथ जल का सीमित उपयोग करना चाहिए और जल संरक्षण में अधिक से अधिक अपनी भूमिका को निभाना चाहिए ।

जल संरक्षण क्या है :-

जल संरक्षण, पानी के उपयोग उपयोगिता को सीमित करना एवं सही तरीके से पानी का संरक्षण करना है। आज हमारे लिए जल संरक्षण हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बन गया हैं। शुद्ध जल एक सीमित संसाधन है जिसके लिए जल संरक्षण अति आवश्यक है। जल स्थानीय उपयोग से लेकर कृषि एवं उद्योग तक एक मूलभूत आवश्यक अंग है जिसके द्वारा यह सभी कार्य सफलतापूर्वक किए जाते हैं। अतः इस प्राकृतिक संसाधन का संरक्षण करना हमारे लिए अति आवश्यक है।

मानव आबादी बढ़ने के कारण पृथ्वी के जल पर एक गहरा प्रभाव पड़ा है जिससे अधिक मात्रा में जल दूषित हो जाता है जो पीने योग्य नहीं रहता है नदी तालाब झील जलाशय एवं भूजल के जल के दुरुपयोग के कारण आज हमें भीषण जल संकट का सामना करना पड़ रहा है और शायद आने वाले समय में यह संकट और भी बढ़ सकता है ।

आबादी और उद्योग की वृद्धि के कारण ताजे जल स्रोतों की आवश्यकता है और बढ़ रही हैं लेकिन हमारे पास जल का सीमित संग्रह बचा है। ऐसी हालात में जल संरक्षण ही एकमात्र उपाय है जो हमें और हमारे आने वाली पीढ़ी को इस संकट से बचा सकता है।

जल संरक्षण में असफल होने से जल की पर्याप्त आपूर्ति में कमी हो सकती है, जिसके कठोर परिणाम हो सकते हैं। इसमें पानी की लागत बढ़ना कम खाद्य आपूर्ति एवं स्वास्थ्य संबंधी खतरे और राजनीतिक संघर्ष शामिल है। जल की कमी के कारण पर्यावरण का संतुलन, भी बिगड़ेगा एवं वन उपवन और वन्य जीव पर संकट आ सकता है।

जल पूरे सृष्टि जगत के लिए आवश्यक है और धरती पर इसका सीमित स्रोत हमें इस बात की ओर इंगित करता है कि कि हम जल संरक्षण की ओर ध्यान दें हमारी आने वाली पीढ़ी को एक-एक बूंद जल के लिए संघर्ष करना पड़ेगा ।

जल संकट का कारण बढ़ती जनसंख्या एवं अशिक्षित समाज है। बढ़ती जनसंख्या के कारण वनों की कटाई जोकि जल संकट (सूखा) का एक विशेष कारण है, पेड़ों से पानी के स्रोत पृथ्वी में ज्यादा नीचे तक नहीं जा पाते हैं जिससे जल आसानी से प्राप्त किया जा सकता है।

वनों की कटाई के कारण वहां की जमीन बंजर हो जाती है जिससे वह कृषि उपयोगी भी नहीं रहती है, इसलिए जल संरक्षण के लिए पेड़ों का लगाया जाना अति आवश्यक है। तथा जल स्रोतों की रक्षा करना जल संकट से बचने का एकमात्र उपाय है अतः हमें नदी तालाब झील सरोवर आदि के जल को स्वच्छ रखना चाहिए जिससे हमें जल संकट का सामना न करना पड़े।

आधुनिक युग में जल संकट का जिम्मेदार कल कारखाने भी हैं जो अपने कारखाने में उपयोग होने वाले जल को दूषित करने के पश्चात नदियों के स्वच्छ जल में छोड़कर उसे भी प्रदूषित कर देते हैं जिससे स्वच्छ जल हमारे उपयोग हेतु नहीं रह जाता है। अतः कल कारखानों को अपनी दूसरी जनों का संचय करना चाहिए एवं उन्हें दूषित रहित करके ही छोड़ना चाहिए ।

जल संरक्षण के उपाय :-ऐसे बहुत से उपाय है जिससे हम जल संरक्षण कर सकते हैं यदि हम जल का सीमित उपयोग करें और उसे बचाने के लिए उचित कदम उठाए तो जल का सीमित भंडार अधिक समय तक बना रह सकता है।

वर्षा के जल का संग्रह करें :-

वर्षा के जल का संग्रह न करना हमारी सबसे बड़ी भूल है। वर्षा का जल सबसे शुद्ध होता है फिर भी आज कल वर्षा का जल संचित ना करके वह नदियों गजरो तालाबों आदि में बह जाता है जिससे बहुत बड़ा नुकसान होता है क्योंकि एक दूषित जल को शुद्ध करने में अधिक मात्रा में खर्च आता है अतः प्राकृतिक रूप से मिला हुआ शुद्ध जल हम बर्बाद कर देते हैं।

वर्षा जल का अगर हमें संरक्षण करें तो हम वर्ष में होने वाली जल की कमी को पूर्ण कर सकते हैं। वर्षा के जल को हम नदी तालाब जलाशय झील एवं छोटे-छोटे गड्ढों का निर्माण करके उसमें वर्षा के जल का संचय करके हम जल संरक्षण का कार्य कर सकते हैं।

इसे संग्रहित जल का उपयोग हम सिंचाई कारखाने में होने वाली धुलाई एवं अन्य उपयोगों में ला सकते हैं जिससे हम भूमिगत जल की भी बचत करते हैं। हम गांव एवं शहर के बाहर तालाब बनाकर जल संरक्षण का कार्य कर सकते हैं जिससे जल संकट वाले क्षेत्र में जल पहुंचा कर राहत का कार्य कर सकते हैं।

भूगर्भ जल का संरक्षण :-

भूगर्भ जल अर्थात जमीन के अंदर के जल को हम हैंड पंप आदि से निकालते हैं। अधिक भूगर्भ जल निकालने के कारण तथा उसका दुरुपयोग करने के कारण भूगर्भ के जल में कमी आती है। हमें भूगर्भ जल का रक्षण करना चाहिए। तालाब, सरोवर ,झील आदि से भूगर्भ जल का स्तर बढ़ता है। भूमि प्रदूषण को रोकने की भी आवश्यकता है जिसके कारण भूगर्भ जल भी प्रदूषित हो रहा है।

जल संरक्षण की उपयोगिता :-

संरक्षित जल का हमारे जीवन में जल संकट से निकलने का एकमात्र उपाय है। हमें वर्षा के शुद्ध जल का संचय करना होगा जिसके लिए हमें छोटे छोटे तालाब का निर्माण करना होगा जिसमें वर्षा के जल का संचय हो सके।

1 :- घरेलू उपयोग में:-

नहाने में ,बर्तन धोने में, वाहन धोने में तथा हम अपने घर की साफ सफाई में इन संरक्षित जलों का उपयोग कर सकते है।

जिससे हम शुद्ध जल की बर्बादी को कम कर सकते हैं। यदि हम अपनी जवाबदारी को समझकर जल का सही उपयोग करें तो जल संरक्षण में अपनी भागीदारी दे सकते हैं ।

2:- कृषि कार्य में उपयोग:-

वर्षा का जल बहुत उपयोगी होता है जो सिचाई के कार्य में आ सकता है। वर्षा के जल में अम्ल की मात्रा बहुत कम होती है जो भूमि के लिए उपयोगी सिद्ध होता है। वर्षा के जल से सिंचाई करने पर भूमि की गुणवत्ता बढ़ जाती है जिससे फसलों की पैदावार अच्छी होती है ।

3:- कारखानों में उपयोग :-

कारखानों में जल संरक्षण के द्वारा प्राप्त किया हुआ जल का उपयोग करना चाहिए जिससे शुद्ध जल की बचत हो सकती है और कारखानों में अधिक मात्रा में जल का उपयोग होता है इसलिए जल संरक्षण आवश्यक है ।

जल संरक्षण के महत्व को हमें इस बात से समझ लेना चाहिए कि हमारी धरती पर स्वच्छ जल 1% बचा है। यदि हम इसी प्रकार जल का दुरुपयोग करते रहे तो आने वाली पीढ़ियों के लिए जल की स्वत समाप्त हो जाएंगे । अतः जागरूक होने की आवश्यकता है और अपनी नैतिक जिम्मेदारी निभाते हुए सभी देशों को जल संरक्षण पर गंभीरता से प्रयास करना चाहिए ।

सोमलता
राजभाषा अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय
आगरा

प्रतिभा पलायन

हमारे देश में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है । बहुत से अच्छे भारतीय डॉक्टर्स को विदेशो में काम करते हुए देखा गया है । वहाँ वह नाम और शोहरत हासिल करते है । यह हमारे देश के लिए गर्व की बात है । हमारे देश में एक से बढ़कर एक प्रतिभाएं है । लेकिन इस विषय पर हमारे देश के सरकार को सोचने की आवश्यकता है । सोचना यहां है कि देश की प्रतिभाएं देश में काम ना करके, बाहरी देशो में काम कर रहे है । अगर देश की प्रतिभाएं देश में ना रहकर बाहर चली जाएँ तो उसे प्रतिभा पलायन कहते है ।

प्रतिभा पलायन एक बहुत बड़ी समस्या है । जिन लोगो के पास प्रतिभा है वह ज़्यादा तरक्की करना चाहते है । उन्हें ज़्यादा सुख सुविधाएं चाहिए । उन्हें जो वेतन और तरक्की चाहिए वह उन्हें यहां अपने देश में नहीं मिलती है । यही वजह है कि अच्छी नौकरी मिलते ही वह दूसरे देश चले जाते है । देश के अच्छे प्रतिभाशाली लोग अच्छे मौके की तलाश में बाहर देशो की ओर रुख कर लेते है ।

अच्छे डॉक्टर, इंजीनियर इत्यादि शिक्षित लोग पश्चिमी देशों में जाकर बस गए है ताकि उन्हें सुख सुविधाओं वाली ज़िन्दगी मिले । कुछ नोबेल पुरस्कार विजेताओं के कई नाम हमे मिल जायेगे जो वास्तव में भारतीय है । लेकिन उन्होंने पश्चिमी देशो में रहना ही पसंद किया है । बुद्धिमान लोग अपने उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाना पसंद करते है क्यूंकि उन्हें लगता है जो शिक्षा उन्हें वहाँ मिलेगी वह भारत में मिलना संभव नहीं है ।

भारत के कई दिग्गजों ने नोबल पुरस्कार जीता जिसने देश का गौरव बढ़ाया । लेकिन देखा जाए तो उन विजेताओं ने बाहरी देशो में काम करना पसंद किया । अब सोचना यह है कि क्यों देश के प्रतिभाशाली लोग यहां से पलायन कर रहे है । वह अपने देशो को छोड़कर दूसरे देशो में रहकर सेवा करना पसंद करते है । यह बेहद सोचने वाली बात है ।

प्रतिभा पलायन इस वजह से भी हो रहा है कि यहां पर लोग उच्च शिक्षा बड़े पैमाने पर प्राप्त नहीं कर सकते है । यहां कुछ सीमाएं है जिसकी वजह से वह शिक्षा और सुविधा नहीं मिल पाती है । यहां देश में अच्छे , उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों को भी बहुत अच्छी नौकरी नहीं मिल पाती है । इसकी वजह से उन्हें काम में वह सुकून और संतुष्टि नहीं मिल पाती है ।

अगर देश में अवसरों और सुविधाओं की कमी ना होती तो कल्पना चावला अपने देश में रहकर शिक्षा प्राप्त कर पाती । वह अपने देश में सपने पूरे ना कर पाती, इसकी वजह है सुविधाओं की कमी । इसलिए ज़्यादातर लोग अच्छी सुविधाओं की वजह से अमरीका और पश्चिमी देशों में चले जाने को विवश है ।

भारत में हर साल कई कंप्यूटर सॉफ्टवेयर और इत्यादि इंजीनियर बनकर निकलते है । सबको अपने मन मुताबिक नौकरी नहीं मिल पाती है । इसलिए वह अच्छे और अपने योग्य नौकरी करना चाहते है । इसके लिए वह उन्नत देशो जैसे कनाडा , अमरीका , ऑस्ट्रेलिया की ओर रुख कर लेते है।

देश को अपने प्रतिभाओ को रोकना , देश का दायित्व है । देश में एक से बढ़कर एक प्रतिभाएं है । उन्हें अपने देश में इतनी अहमियत नहीं मिलती है । इसलिए वह दूसरे देशो में चले जाते है । देश की जिम्मेदारी है इन प्रतिभाओ को रोकना और उन्हें प्रोत्साहन देना । यह देश के लिए बहुत बड़ी चुनौती है । लेकिन प्रतिभा पलायन को रोकना अनिवार्य हो गया है । देश का प्रथम लक्ष्य होना चाहिए इन प्रतिभाओ को सही दिशा और उचित सम्मान देना जो दुर्भाग्यवश यहां नहीं मिल पाता है ।

देश में आर्थिक समस्याओं की वजह से प्रतिभाओ को वह उत्साह, समर्थन नहीं मिल पाता है । कई लोगो में प्रतिभाएं होती है लेकिन कई अवसरों की कमी हो जाती है जिस वजह से वह अपना वतन छोड़कर चले जाते हैं । देश के युवा देश की उन्नति के लिए जिम्मेदार होता है । देश में जिस तरह से बेरोजगारी बढ़ती जा रही है उससे देश के अच्छे और टैलेंटेड लोग देश छोड़कर चले जा रहे है ।

देश में बेरोजगारी और आर्थिक समस्याओं की वजह से युवाओं को अपने प्रतिभा को बढ़ाने का मौका नहीं मिलता है । हम सभी सत्य नडेला से वाकिफ है । वह माइक्रोसॉफ्ट के सीईओ है । वह हमारे देश की प्रतिभा है लेकिन विदेश में रहते है । उनका जन्म हैदराबाद में हुआ लेकिन आज वह विदेश में अपने देश का नाम ऊँचा कर रहे है ।
लोगो के अंदर छिपी प्रतिभाएं बाहर नहीं आ पाती है । इसकी वजह है क्षेत्र और कई अलग समस्याएं । हर व्यक्ति में कुछ ना कुछ प्रतिभाएं छिपी रहती है । उनके अंदर छिपे कलाकार का सम्मान देना चाहिए । उनकी अहमियत को समझकर उसे आगे बढ़ाना चाहिए । तब उनका विश्वास अपने देश पर बढ़ेगा और वह देश छोड़कर नहीं जाएंगे ।
निष्कर्ष प्रतिभाओ की कदर देश को करनी चाहिए तभी देश उन्नति करेगा । प्रतिभा पलायन पर अंकुश लगाने के लिए देश को अपनी तरफ से कोशिश करनी होगी । देश की सरकारें सभी अपने स्तर पर काम कर रही है । सरकार कई योजनाएं बना रहे है ताकि प्रतिभा पलायन को रोका जा सके । रोजगार के बेहतर और अच्छे अवसर जुटाने की सरकार पूरी कोशिशें कर रही है ।

श्री अशोक कुमार , वास्तुविद
आंचलिक कार्यालय , लखनऊ

महिला सशक्तिकरण

'महिला सशक्तिकरण' के बारे में जानने से पहले हमें ये समझ लेना चाहिये कि हम 'सशक्तिकरण' से क्या समझते है। 'सशक्तिकरण' से तात्पर्य किसी व्यक्ति की उस क्षमता से है जिससे उसमें ये योग्यता आ जाती है जिसमें वो अपने जीवन से जुड़े सभी निर्णय स्वयं ले सके। महिला सशक्तिकरण में भी हम उसी क्षमता की बात कर रहे है जहाँ महिलाएँ परिवार और समाज के सभी बंधनों से मुक्त होकर अपने निर्णयों की निर्माता खुद हो।

महिलाओं को सशक्त बनाना जरुरी क्यों है-

पंडित जवाहर लाल नेहरु द्वारा कहा गया मशहूर वाक्य "लोगों को जगाने के लिये", महिलाओं का जागृत होना जरुरी है। एक बार जब वो अपना कदम उठा लेती है, परिवार आगे बढ़ता है, गाँव आगे बढ़ता है और राष्ट्र विकास की ओर उन्मुख होता है। भारत में, महिलाओं को सशक्त बनाने के लिये सबसे पहले समाज में उनके अधिकारों और मूल्यों को मारने वाले उन सभी राक्षसी सोच को मारना जरुरी है जैसे दहेज प्रथा, अशिक्षा, यौन हिंसा, असमानता, भ्रूण हत्या, महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा, बलात्कार, वैश्यावृति, मानव तस्करी और ऐसे ही दूसरे विषय। लैंगिक भेदभाव राष्ट्र में सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक अंतर ले आता है जो देश को पीछे की ओर ढ़केलता है। भारत के संविधान में उल्लिखित समानता के अधिकार को सुनिश्चित करने के लिए महिलाओं को सशक्त बनाना सबसे प्रभावशाली उपाय है इस तरह की बुराईयों को मिटाने के लिये।

लैंगिक समानता को प्राथमिकता देने से पूरे भारत में महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिला है। महिला सशक्तिकरण के उच्च लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये इसे हर एक परिवार में बचपन से प्रचारित व प्रसारित करना चाहिये। ये जरुरी है कि महिलाएँ शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रुप से मजबूत हो। चूंकि एक बेहतर शिक्षा की शुरुआत बचपन से घर पर हो सकती है, महिलाओं के उत्थान के लिये एक स्वस्थ परिवार की जरुरत है जो राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिये आवश्यक है। आज भी कई पिछड़े क्षेत्रों में माता-पिता की अशिक्षा, असुरक्षा और गरीबी की वजह से कम उम्र में विवाह और बच्चे पैदा करने का चलन है। महिलाओं को मजबूत बनाने के लिये महिलाओं के खिलाफ होने वाले दुर्व्यवहार, लैंगिक भेदभाव, सामाजिक अलगाव तथा हिंसा आदि को रोकने के लिये सरकार कई सारे कदम उठा रही है।

महिला सशक्तिकरण महिलाओं की समस्याओं का उचित समाधान करने के लिये महिला आरक्षण बिल-108वाँ संविधान संशोधन का पास होना बहुत जरुरी है ये संसद में महिलाओं की 33% हिस्सेदारी को सुनिश्चित करता है। दूसरे क्षेत्रों में भी महिलाओं को सक्रिय रुप से भागीदार बनाने के लिये कुछ प्रतिशत सीटों को आरक्षित किया गया है।

सरकार को महिलाओं के वास्तविक विकास के लिये पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों में जाना होगा और वहाँ की महिलाओं को सरकार की तरफ से मिलने वाली सुविधाओं और उनके अधिकारों से अवगत कराना होगा जिससे उनका भविष्य बेहतर हो सके। महिला सशक्तिकरण के सपने को सच करने के लिये लड़िकयों के महत्व और उनकी शिक्षा को प्रचारित करने की जरुरत है।

लैंगिक असमानता भारत में मुख्य सामाजिक मुद्दा है जिसमें महिलाएँ पुरुषवादी प्रभुत्व देश में पिछड़ती जा रही है। पुरुष और महिला को बराबरी पर लाने के लिये महिला सशक्तिकरण में तेजी लाने की जरुरत है। सभी क्षेत्रों में महिलाओं का उत्थान, राष्ट्र की प्राथमिकता में शामिल होना चाहिये। महिला और पुरुष के बीच की असमानता कई समस्याओं को जन्म देती है जो राष्ट्र के विकास में बड़ी बाधा के रुप में सामने आ सकती है। ये महिलाओं का जन्मसिद्ध

अधिकार है कि उन्हें समाज में पुरुषों के बराबर महत्व मिले। वास्तव में सशक्तिकरण को लाने के लिये महिलाओं को अपने अधिकारों से अवगत होना चाहिये। न केवल घरेलू और पारिवारिक जिम्मेदारियों बल्कि महिलाओं को हर क्षेत्रों में सक्रिय और सकारात्मक भूमिका निभानी चाहिये। उन्हें अपने आस-पास और देश में होने वाली घटनाओं को भी जानना चाहिये।

महिला सशक्तिकरण में ये ताकत है कि वो समाज और देश में बहुत कुछ बदल सकें। वो समाज में किसी समस्या को पुरुषों से बेहतर ढ़ंग से निपट सकती है। वो देश और परिवार के लिये अधिक जनसंख्या के नुकसान को अच्छी तरह से समझ सकती है। अच्छे पारिवारिक योजना से वो देश और परिवार की आर्थिक स्थिति का प्रबंधन करने में पूरी तरह से सक्षम है। पुरुषों की अपेक्षा महिलाएँ किसी भी प्रभावकारी हिंसा को संभालने में सक्षम है चाहे वो पारिवारिक हो या सामाजिक।

महिला सशक्तिकरण के द्वारा ये संभव है कि एक मजबूत अर्थव्यवस्था के महिला-पुरुष समानता वाले वाले देश को पुरुषवादी प्रभाव वाले देश से बदला जा सकता है। महिला सशक्तिकरण की मदद से बिना अधिक प्रयास किये परिवार के हर सदस्य का विकास आसानी से हो सकता है। एक महिला परिवार में सभी चीजों के लिये बेहद जिम्मेदार मानी जाती है अत: वो सभी समस्याओं का समाधान अच्छी तरह से कर सकती है। महिलाओं के सशक्त होने से पूरा समाज अपने आप सशक्त हो जायेगा।

मनुष्य, आर्थिक या पर्यावरण से संबंधित कोई भी छोटी या बड़ी समस्या का बेहतर उपाय महिला सशक्तिकरण है। पिछले कुछ वर्षों में हमें महिला सशक्तिकरण का फायदा मिल रहा है। महिलाएँ अपने स्वास्थ्य, शिक्षा, नौकरी, तथा परिवार, देश और समाज के प्रति जिम्मेदारी को लेकर ज्यादा सचेत रहती है। वो हर क्षेत्र में प्रमुखता से भाग लेती है और अपनी रुचि प्रदर्शित करती है। अंतत: कई वर्षों के संघर्ष के बाद सही राह पर चलने के लिये उन्हें उनका अधिकार मिल रहा है।

भारत में महिला सशक्तिकरण की जरुरत

महिला सशक्तिकरण क्या है ?

महिला सशक्तिकरण को बेहद आसान शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है कि इससे महिलाएँ शक्तिशाली बनती है जिससे वो अपने जीवन से जुड़े हर फैसले स्वयं ले सकती है और परिवार और समाज में अच्छे से रह सकती है। समाज में उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिये उन्हें सक्षम बनाना महिला सशक्तिकरण है।

भारत में महिला सशक्तिकरण की क्यों जरुरत है ?

महिला सशक्तिकरण की जरुरत इसलिये पड़ी क्योंकि प्राचीन समय से भारत में लैंगिक असमानता थी और पुरुषप्रधान समाज था। महिलाओं को उनके अपने परिवार और समाज द्वार कई कारणों से दबाया गया तथा उनके साथ कई प्रकार की हिंसा हुई और परिवार और समाज में भेदभाव भी किया गया ऐसा केवल भारत में ही नहीं बल्कि दूसरे देशों में भी दिखाई पड़ता है। महिलाओं के लिये प्राचीन काल से समाज में चले आ रहे गलत और पुराने चलन को नये रिती-रिवाजों और परंपरा में ढ़ाल दिया गया था। भारतीय समाज में महिलाओं को सम्मान देने के लिये माँ, बहन, पुत्री, पत्नी के रुप में महिला देवियो को पूजने की परंपरा है लेकिन इसका ये कतई मतलब नहीं कि केवल महिलाओं

को पूजने भर से देश के विकास की जरुरत पूरी हो जायेगी। आज जरुरत है कि देश की आधी आबादी यानि महिलाओं का हर क्षेत्र में सशक्तिकरण किया जाए जो देश के विकास का आधार बनेंगी।

भारत एक प्रसिद्ध देश है जिसने 'विविधता में एकता' के मुहावरे को साबित किया है, जहाँ भारतीय समाज में विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग रहते है। महिलाओं को हर धर्म में एक अलग स्थान दिया गया है जो लोगों की आँखों को ढ़के हुए बड़े पर्दे के रुप में और कई वर्षों से आदर्श के रुप में महिलाओं के खिलाफ कई सारे गलत कार्यों (शारीरिक और मानसिक) को जारी रखने में मदद कर रहा है। प्राचीन भारतीय समाज दूसरी भेदभावपूर्ण दस्तूरों के साथ सती प्रथा, नगर वधू व्यवस्था, दहेज प्रथा, यौन हिंसा, घरेलू हिंसा, गर्भ में बच्चियों की हत्या, पर्दा प्रथा, कार्य स्थल पर यौन शोषण, बाल मजदूरी, बाल विवाह तथा देवदासी प्रथा आदि परंपरा थी। इस तरह की कुप्रथा का कारण पितृसत्तामक समाज और पुरुष श्रेष्ठता मनोग्रन्थि है।

पुरुष पारिवारिक सदस्यों द्वारा सामाजिक राजनीतिक अधिकार (काम करने की आजादी, शिक्षा का अधिकार आदि) को पूरी तरह प्रतिबंधित कर दिया गया। महिलाओं के खिलाफ कुछ बुरे चलन को खुले विचारों के लोगों और महान भारतीय लोगों द्वारा हटाया गया जिन्होंने महिलाओं के खिलाफ भेदभावपूर्ण कार्यों के लिये अपनी आवाज उठायी। राजा राम मोहन रॉय की लगातार कोशिशों की वजह से ही सती प्रथा को खत्म करने के लिये अंग्रेज मजबूर हुए। बाद में दूसरे भारतीय समाज सुधारकों (ईश्वर चंद्र विद्यासागर, आचार्य विनोभा भावे, स्वामी विवेकानंद आदि) ने भी महिला उत्थान के लिये अपनी आवाज उठायी और कड़ा संघर्ष किया। भारत में विधवाओं की स्थिति को सुधारने के लिये ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने अपने लगातार प्रयास से विधवा पुर्न विवाह अधिनियम 1856 की शुरुआत करवाई।

पिछले कुछ वर्षों में महिलाओं के खिलाफ होने वाले लैंगिक असमानता और बुरी प्रथाओं को हटाने के लिये सरकार द्वारा कई सारे संवैधानिक और कानूनी अधिकार बनाए और लागू किये गये है। हालाँकि ऐसे बड़े विषय को सुलझाने के लिये महिलाओं सहित सभी का लगातार सहयोग की जरुरत है। आधुनिक समाज महिलाओं के अधिकार को लेकर ज्यादा जागरुक है जिसका परिणाम हुआ कि कई सारे स्वयं-सेवी समूह और एनजीओ आदि इस दिशा में कार्य कर रहे है। महिलाएँ ज्यादा खुले दिमाग की होती है और सभी आयामों में अपने अधिकारों को पाने के लिये सामाजिक बंधनों को तोड़ रही है। हालाँकि अपराध इसके साथ-साथ चल रहा है।

कानूनी अधिकार के साथ महिलाओं को सशक्त बनाने के लिये संसद द्वारा पास किये गये कुछ अधिनियम है - एक समान पारिश्रमिक एक्ट 1976, दहेज रोक अधिनियम 1961, अनैतिक व्यापार (रोकथाम) अधिनियम 1956, मेडिकल टर्म्नेशन ऑफ प्रेग्नेंसी एक्ट 1987, बाल विवाह रोकथाम एक्ट 2006, लिंग परीक्षण तकनीक (नियंत्रक और गलत इस्तेमाल के रोकथाम) एक्ट 1994, कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन शोषण एक्ट 2013।

<u>निष्कर्ष</u>

भारतीय समाज में सच में महिला सशक्तिकरण लाने के लिये महिलाओं के खिलाफ बुरी प्रथाओं के मुख्य कारणों को समझना और उन्हें हटाना होगा जो कि समाज की पितृसत्तामक और पुरुष प्रभाव युक्त व्यवस्था है। जरुरत है कि हम महिलाओं के खिलाफ पुरानी सोच को बदले और संवैधानिक और कानूनी प्रावधानों में भी बदलाव लाये।

<u>संकलित</u>

कृष्ण प्रताप सिंह

राजभाषा अधिकारी

क्षेत्रीय कार्यालय

लखनऊ

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911
अनलॉक बैंकिंग सेवाएं / Unlock Banking Services
केवल एक मिस्ड कॉल
JUST A CALL AWAY
कभी भी...कहीं भी.../Anytime... Any Where...
लोन चाहिए? बस कीजिए मिस्ड कॉल/एसएमएस
Want a Loan? Give a Missed Call /Sms
9223 901 111
जमा करवाना है? बस कीजिए मिस्ड कॉल/एसएमएस
To make a Deposit Give a Missed Call /Sms
9223 502 222
पूर्ण जानकारी के साथ बैंक के प्रतिनिधि आपसे तुरन्त सम्पर्क करेंगे. अब बैंकिंग आपके लिए और त्वरित व आसान.
Our Bank's Representative will get back to you with details immediately. Banking is now quicker and more convenient for you.
आपको त्वरित सेवाएं प्रदान करने हेतु हम आपकी कॉल के लिए प्रतीक्षारत हैं।
We are waiting for your call to give you faster service.
Toll Free Number 1800-22-1911
www.centralbankofindia.co.in
Like us on: https://www.facebook.com/CentralBankofIndia
Follow us on: https://twitter.com/centralbank_in

विक्रम सिंह राघव
सहायक प्रबंधक
शाखा: सिविल लाइंस, आगरा

वक्त क्या दिखायेगा अब? देखा जाएगा

वक्त क्या दिखाएगा अब? देखा जाएगा .
तकदीर ने सुना दिया है, फैसला अपना .
हम चाहेंगे जैसा , कल वैसा ही अपना आएगा .
भाग्य का फैसला बदल देंगे हम ,
पुरुषार्थ से अपना कल लिखा जाएगा ,
क्यों रोए ? गम क्यों करें ?
हर पल घुट घुट के क्यों मरें .
आज का काम , अब कल पर न टाला जाएगा.
लिखने दे दी है तकदीर ने ,
हाथों में मेरे अब.
मैं जैसा चाहूंगा, वैसा कल लिखा जाएगा .
मर्जी शामिल होगी ईश्वर की भी उसमें ,
तभी यह साहसिक कार्य किया जाएगा .
अब जीवन का हर एक पल भरपूर दिया जाएगा,
हृदय की भाषा कहां समझते हैं लोग,
अब युक्ति से जीवन जिया जाएगा .
कमल तो बहुत बन लिए हम ,
चिड़ियों से चहक लिए हम.
गुलाब बन कर भी देखा हमने,
परोपकार में जीवन बहुत बिताया हमने ,
राम से आदर्श और कर्तव्य निभाएं हमने .
अब कृष्ण का संचालन किया जाएगा,
जीवन के उपवन में प्रसून ही खेलेंगे अब .
खरपतवार को उखाड़ फेंक दिया जाएगा..
वक्त क्या दिखाएगा अब, देखा जाएगा ...

****

लखनऊ अंचल की व्यावसायिक स्थिति

31-03-2022 की स्थिति (राशि करोड़ रूपए में)

क्रमांक	ब्यौरे /Particulars	31-03-2022
1	सकल व्यवसाय	51581
2	कुल जमा	40305
3	कुल अग्रिम	11276
4	चालू जमा	1553
5	बचत जमा	22918
6	सावधि जमा	15830
7	एनपीए	1045
8	शाखाओं की कुल संख्या	554
9	प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र	8221

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911
सेन्ट आवास ऋण
आपके अपने घर का सपना साकार
करने में आपके साथ
CENT HOME LOAN
With you to make your dream
home come true

क्षेत्रीय कार्यालय आगरा
महिला दिवस का आयोजन

दिनांक 08/03/2022 को क्षेत्रीय कार्यालय आगरा में महिला दिवस का आयोजन किया गया इस अवसर पर क्षेत्रीय प्रबंधक महोदय श्री एल.सी. मीणा ने सभी महिला स्टाफ सदस्यों को पुष्प व उपहार देकर सम्मानित किया ।

क्षेत्रीय कार्यालय मेरठ

<u>महिला दिवस का आयोजन</u>

बैंक नराकास, मेरठ द्वारा हिंदी पत्रिका प्रतियोगिता वर्ष **2021-22**

नराकास हिंदी पत्रिका प्रतियोगिता वर्ष 2021-22 हेतु मेरठ क्षेत्र की पत्रिका "सेंट मंगल " को द्वितीय शील्ड एवं पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया गया.

नराकास अध्यक्ष श्री देवराज आर, क्षेत्रीय प्रबंधक , केनरा बैंक के कर कमलो से पुरस्कार ग्रहण करते श्री आर.एल.नायक, क्षेत्र प्रमुख ,श्रीमती अर्चना गुप्ता, प्रबंधक राजभाषा , श्री विक्रम सिंह यादव,प्रबंधक .

गाँव की ज़िदगी

गाँव मे ऐसे ही नंगे पांव , चलती ज़िंदगी।
बोझ के नीचे दबी , लोगों की देखो जिंदगी।।
भोर होते ही यहाँ , खेतो में होती ज़िंदगी।
मिट्टी और गोबर में सनी,गाँव की ये ज़िंदगी।।
न यहाँ कपड़े हैं तन पर , तप रही हैं ज़िंदगी।
धूप सारी तन पे लेके , गल रही है जिंदगी।।
पैरों में छाले पड़े , पर चल रही है जिंदगी।
खून से खेतों को सींचे , है यहाँ पर ज़िंदगी।।
न किसी से काम है बस , काम से है जिंदगी।
ईश के आशीष पर ही , गांव की है जिंदगी।।
भूख हो या प्यास हो,सबसे लड़ती ज़िंदगी।
बच्चे बूढ़े हर कोई बस , जी रहे ये जिंदगी।।
गाँव के विद्यालय हैं खाली,खेतो में है जिंदगी।
न कलम न कॉपी है, खुरपी यहाँ पर ज़िंदगी।।
जब सूबे से शाम तक ये,काम करती ज़िंदगी।
तब कहि जाकर मिली,दो रोटी की ये जिंदगी।।
न कही जाती है पढ़ने,कामो में लिपटी ज़िंदगी।
खाने के खातिर यहाँ, सब छोड़ देती ज़िंदगी।।
है नही कुछ भी यहाँ बस , नंगी रहती ज़िंदगी।
सर पे बोझा है उठाये,बचपन की देखो ज़िंदगी।।
न कभी मिलती दवा , बस भूख से ही जिंदगी।
न मिली रोटी कहि तो , पानी से जीती ज़िंदगी।।
भूख से गांवों में देखो , मर रही है जिंदगी।
ईश के आशीष से , बस चल रही है जिंदगी।।

कामता प्रसाद द्विवेदी
शाखा प्रबंधक, गौरीगंज, अमेठी

आओ! अपनी हिंदी भाषा को प्रभावशाली बनाए.

संकलन एवं प्रस्तुति – श्री अशोक कुमार तिवारी , मुख्य प्रबंधक , क्षेका कानपुर

प्रत्येक शक्तिशाली राष्ट्र की एक शक्तिशाली और प्रभावशाली भाषा होती है. किसी भी भाषा का विकास एक सतत प्रक्रिया है. जो भाषा दूसरी भाषाओं के शब्दों का अपने अनुकूल परिवेश के अनुसार ढाल लेती है, वह निरंतर शक्तिशाली बनती जाती है. इसी क्रम में हिंदी का विकास देववाणी संस्कृत भाषा से हुआ है. गैर हिंदी भाषी विद्वानों ने हिंदी भाषा के विकास में पर्याप्त योगदान दिया है.

भारत एक विशाल देश है. यहां राजनैतिक कारणों से भाषा का मुद्दा सदा संवेदनशील रहा है. भाषाई वैमनश्यता का फायदा विदेशी ताकतों ने भी उठाया. देश की आजादी के लिए आहूत स्वतंत्रता संग्राम में हमारे देशप्रेमियों को भाषाई एकता की जरूरत पड़ी और देश के स्वतंत्र होते ही 1963 में राजभाषा अधिनियम और 1976 में राजभाषा नियम बनाए गए ताकि केंद्र सरकार द्वारा हिंदी भाषी राज्यों और गैर हिंदी भाषी राज्यों के बीच 100%- 55% तक पत्राचार किया जा सके. समय के साथ, भारत सरकार के राजाभाषा विभाग ने इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किए. आज हिंदी का महत्व दक्षिणभाषी राज्यों ने समझा और अपने-अपने राज्यों में हिंदी शिक्षण की व्यवस्था की है. उन्हें अब यह मालूम हो गया है कि अखिल भारतीय सेवाओं में चयन के लिए हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान अनिवार्य है.

12वीं शताब्दी के बाद आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास का कालखण्ड आता है. प्रारम्भ के 600 वर्षों तक अरबी - फारसी का प्रभाव रहा. इसके पश्चात करीब 200 वर्षों तक अंग्रेजी, पुर्तगाली, फ्रांसीसी और डच भाषा का प्रभाव रहा. भारत में रहने वाले मुस्लिमों से अरबी-फारसी बोलने वाले मुस्लिम काफी घुलमिल गए थे, इसलिए हिंदी में इन शब्दों की अधिकता है. इसके अतिरिक्त अंग्रेजी शब्दों का भी पर्याप्त प्रयोग हिंदी भाषा में किया गया. हिंदी की कुल शब्द सम्पदा लगभग 2 लाख है जिसमें 85 प्रतिशत शब्द अपने हिंदी के हैं और शेष 15 प्रतिशत शब्द विदेशी भाषाओं से आत्मसात किये गए हैं. हिंदी भाषा की जीवंतता का प्रमाण यह है कि इसने विदेशी और अन्य भारतीय भाषाओं से शब्द ग्रहण करके अपने आपको सम्पन्न बनाया है. हिंदी भाषा ने विदेशी भाषा के शब्दो को अपने अनुकूल ढ़ाला है, अर्थात विदेशी भाषा के शब्दों का हिंदीकरण हो गया है. इस प्रकार हिंदी का शब्दकोष कठोर नियमो से आबद्ध नहीं है.

हिंदी के शब्द भंडार को हम मोटे तौर पर पंच भागों में बांट सकते हैं:-

तत्सम शब्द
तद्भव शब्द
देशज शब्द
दक्षिण भारत की भाषाओं (द्रविड भाषाओ) के शब्द
विदेशी शब्द

तत्सम शब्द :- देववाणी संस्कृत हिंदी की जननी है. तत्सम का अर्थ होता है - उसके समान अर्थात संस्कृत के समान.

हिंदी में अधिकांश शब्द संस्कृत से आए हैं. ऐसे शब्द हैं- कक्षा, अनंत विद्या अग्रज, कवि, अग्नि, कनिष्ठ, काव्य, कोध कृपा आदि.

1. **तद्भव शब्द :** तद्भव शब्द का अर्थ होता है – उससे उत्पन्न अर्थात संस्कृत से उत्पन्न . इसके अंतर्गत वे शब्द आते हैं जो संस्कृत शब्दों से उत्पन्न होकर विकसित हुए हैं. हिंदी में आधे से अधिक शब्द इसी वर्ग के हैं. तत्सम शब्द वे शब्द हैं जो जो संस्कृत भाषा के शब्दों के समान हैं जब कि तद्भव शब्द वे शब्द हैं जो संस्कृत भाषा के शब्दों से उत्पन्न हुए हैं. जैसे 'सुवर्ण' संस्कृत शब्द हिंदी में 'सोना' शब्द बन गया.
2. **देशज शब्द :** देशज शब्द वे शब्द हैं जो लोक भाषा में लम्बे समय से प्रचलित रहे हैं, इन शब्दों की उत्पत्ति का कोई भाषाई स्रोत नहीं मिलता है. कुछ देशज प्रचलित शब्द इस प्रकार हैं: टक्कर, जगमग, झिलमिल, डगमग, तड़ातड़, ठनक, झंकार, ढीलढाल आदि.
3. **दक्षिण भारत की भाषाओं (द्रविड भाषाओ) के शब्द :** दक्षिण भारत के अनेक विद्वानों ने हिंदी भाषा के विकास में अपना महत्व पूर्ण योगदान दिया है. हिंदी के अनेक शब्द द्रविड़ परिवार की भाषाओं से लिए गए हैं. तमिल भाषा का काप्पी शब्द हिंदी में 'काफी' बन गया है. इसी प्रकार कुछ अन्य शब्द हैं: अर्क, काक, कानन, कुटिल, कुण्ड, कुंडल, कोण, चतुर, चूड़ा, तामरस, तूल, दण्ड, नीर, मयूर, माता, मीन, लाला, शव आदि.
4. **विदेशी शब्द :** हिंदी में विदेशी शब्दों का प्रयोग 10वीं और 11वीं शताब्दी में विदेशी आक्रमणकारियों के साथ होने लगा था. आधुनिक काल में अंग्रेजी तथ अन्य यूरोपीय शब्द काफी संख्या में हिंदी में आए. हिंदी ने इन शब्दों को अपनी प्रकृति के अनुकूल ढ़ालकर स्वीकार किया है.

हिंदी एक अत्यंत ही वैज्ञानक भाषा है. हिंदी भाषा का जैसा उच्चारण होता है वैसा ही लिखा जाता है. हिंदी के अनुस्वार और विसर्ग चिन्हों का प्रयोग करके इसके उच्चारण को और भी अधिक वैज्ञानिक बना दिया है. बाद में जब हिंदी ने यूरोपीय देशों की भाषाओं से और अरबी-फारसी से शब्द ग्रहण किए अतो उन शब्दों के सही उच्चारण के लिए उसने नए चिन्ह अपनाए. जैसे 'ऑपरेशन' शब्द अंग्रेजी से आया है. इसका प्रथम स्वर 'ऑ' है. हिंदी में यह स्वर नहीं था. हिंदी का अपना स्वर 'आ' है. अत: हिंदी ने 'ऑपरेशन' जैसे अंग्रेजी शब्दों के लिए उच्चारण के लिए एक नया स्वर 'ऑ' शामिल कर लिया.

इसप्रकार वर्तमान में हिंदी की 12 स्वर ध्वनियां है – अ,आ,ऑ,इ,ई,उ,ऊ,ए,ऐ,ओ,औ,अं,अ:। इसी प्रकार हिंदी की 44

व्यंजन ध्वनियां हैं. किसी विशेष ध्वनि का उच्चारण कंठ तालु, मूर्द्धा, दंत या ओष्ठ से किया जाता है. कुछ ध्वनियों का

उच्चारण मुख के दो अंगों के संयोजन (जैसे- कंठ+तालु, कंठ+ओष्ठ, दंत+ओष्ठ,मुख+नाक) से भी किया जाता है.

क्षेत्रीय कार्यालय इटावा

राजभाषा प्रदर्शनी

दिनांक 25/03/2022 को क्षेत्रीय कार्यालय इटावा में राजभाषा प्रदर्शनी लगाई गई उक्त अवसर पर पुस्तक भगवत गीता हाथ लिए क्षेत्रीय प्रबंधक इटावा श्री सुभाष चन्द्र चक्रवर्ती एवं श्री ऋिषी पाल सिंह मुख्य प्रबंधक इटावा एवं अन्य स्टाफ सदस्यगण ।

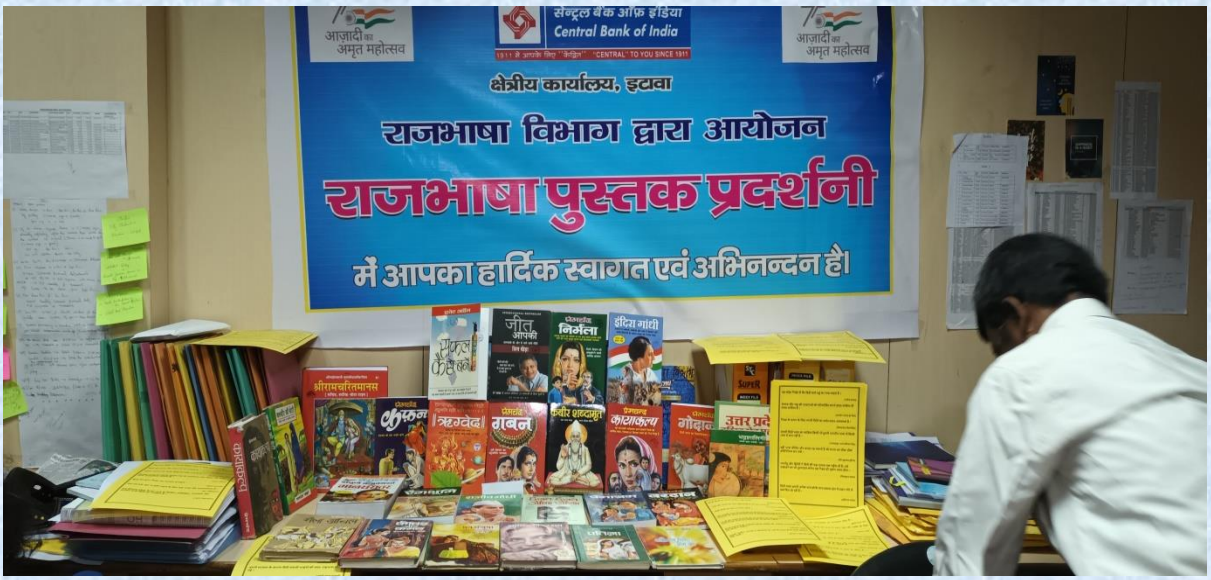

दिनांक 25/03/2022 को क्षेत्रीय कार्यालय इटावा में आयोजित राजभाषा प्रदर्शनी

स्वर्ग

जब एक टेलीफोन साक्षात्कार में नाइजीरियाई अरबपति फेमी ओटेडोला से रेडियो प्रस्तोता ने पूछा:

"सर आपको क्या याद है कि आपको जीवन में सबसे अधिक खुशी कब मिली?"

फेमी ने कहा:

"मैं जीवन में खुशी के चार चरणों से गुजरा हूं, और आखिरकार मुझे सच्चे सुख का अर्थ समझ में आया।"

पहला चरण धन और साधन संचय करना था।

लेकिन इस स्तर पर मुझे वह सुख नहीं मिला जो मैं चाहता था।

फिर क़ीमती सामान और वस्तुओं को इकट्ठा करने का दूसरा चरण आया।

लेकिन मैंने महसूस किया कि इस चीज का असर भी अस्थायी होता है और कीमती चीजों की चमक ज्यादा देर तक नहीं रहती।

फिर आया बड़ा प्रोजेक्ट मिलने का तीसरा चरण। वह तब था जब नाइजीरिया और अफ्रीका में डीजल की आपूर्ति का 95% मेरे पास था।

मैं अफ्रीका और एशिया में सबसे बड़ा पोत मालिक भी था। लेकिन यहां भी मुझे वो खुशी नहीं मिली जिसकी मैंने कल्पना की थी.

चौथा चरण वह समय था जब मेरे एक मित्र ने मुझे कुछ विकलांग बच्चों के लिए व्हीलचेयर खरीदने के लिए कहा।

लगभग 200 बच्चे।

दोस्त के कहने पर मैंने तुरंत व्हीलचेयर खरीद ली।

लेकिन दोस्त ने जिद की कि मैं उसके साथ जाऊं और बच्चों को व्हीलचेयर सौंप दूं। मैं तैयार होकर उसके साथ चल दिया।

वहाँ मैंने इन बच्चों को अपने हाथों से ये व्हील चेयर दी। मैंने इन बच्चों के चेहरों पर खुशी की अजीब सी चमक देखी। मैंने उन सभी को व्हीलचेयर पर बैठे, घूमते और मस्ती करते देखा।

यह ऐसा था जैसे वे किसी पिकनिक स्पॉट पर पहुंच गए हों, जहां वे जैकपॉट जीतकर शेयर कर रहे हों।

मुझे अपने अंदर असली खुशी महसूस हुई। जब मैंने छोड़ने का फैसला किया तो बच्चों में से एक ने मेरी टांग पकड़ ली।

मैंने धीरे से अपने पैरों को छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन बच्चे ने मेरे चेहरे को देखा और मेरे पैरों को कस कर पकड़ लिया।

मैं झुक गया और बच्चे से पूछा: क्या तुम्हें कुछ और चाहिए?

इस बच्चे ने मुझे जो जवाब दिया, उसने न केवल मुझे झकझोर दिया बल्कि जीवन के प्रति मेरे दृष्टिकोण को भी पूरी तरह से बदल दिया।

इस बच्चे ने कहा:

"मैं आपका चेहरा याद रखना चाहता हूं ताकि जब मैं आपसे स्वर्ग में मिलूं, तो मैं आपको पहचान सकूं और एक बार फिर आपका धन्यवाद कर सकूं।"

उपरोक्त शानदार कहानी का मर्म यह है कि हम सभी को अपने अंतर्मन में झांकना चाहिए और यह मनन अवश्य करना चाहिए कि, इस जीवन और संसार और सारी सांसारिक गतिविधियां
को छोड़ने के बाद, आपको किस लिए याद किया जाएगा?

क्या कोई आपका चेहरा फिर से देखना चाहेगा ...

उमंग

पप्पू पाँच सौ के नोट पर लिखा नम्बर से मोबाइल लगा रहा था
दोस्त – ये क्या कर रहा है?
पप्पू – मित्र मैं ये चेक कर रहा हूँ कि बापू तो चले गए पर उनका मोबाइल किसके पास है.

रमेश : दोस्त एक सवाल मेरे मन में है पूछूं?
सुरेश : हां पूंछ .
रमेश : यार जब कोई मजाक उड़ाता है तो मजाक उड़कर कहा जाता है?

साक्षारकर्ता : मैं तुमसे सिर्फ एक ही सवाल पूछूंगा, बताओं जिंदगी में क्या खोया और क्या पाया है?
गप्पू : सर, जिससे मिठाई बनती है वो खोया है और जो चारपाई में लगा होता है वो पाया है.

संजू को उसकी गर्लफ्रेंड ने मैसेज किया : " I Miss you"
संजू ने अपना खतरनाक दिमाग लगाया और दो घंटे बाद जबाब दिया : " I Mr. you?"

शिक्षक : बताओ बच्चो वास्कोडिगामा भारत कब आया था?
छोटू : जी सर्दियों में आया था.
शिक्षक : कहां से पढ़ लिया ? तुमसे किसने कहा?
छोटू : मैडम कसम से, मैंने किताब में फोटो देखी थी, उसने कोट पहन रखा था.

पिताजी : तू फेल कैसे हो गया.
बेटा : बापू सवाल ही ऐसे ऐसे आए थे जो मुझे पता नहीं थे.
पिताजी : फिर तूने उत्तर कैसे लिखे?
बेटा : मैंने भी ऐसे उत्तर लिखे जो मास्टर को पता नहीं थे.

चिंटू एक पेट्रोल पम्प पर गया. वहां बोर्ड लगा था : कृपया मोबाइल का इस्तेमाल न करें.
चिंटू ने फौरन अपना मोबाइल निकाला और एक एक करके अपने सभी दोस्तों को कॉल करके हिदायत दी – " यार अभी मुझे कॉल मत करना, यहां मोबाइल का इस्तेमाल करना मना है."

शिक्षक : सेमेस्टर सिस्टम से क्या फ़ायदा है, बताओ?
छात्र : फ़ायदा तो पता नहीं क्या होता है, पर बेइज़्ज़ती साल में दो बार हो जाती है.

पति : तुम मुझे बात बात में अपनी मां के पास जाने की धमकी देती हो क्या अच्छी बात है?
पत्नी : ठीक है अब मैं मां को यहां बुला लेती हूँ.

हमें क्या कहेंगे लोग ?

जीवन में सबसे बड़ा रोग

हमें क्या कहेंगे लोग

श्रम करने में जो सकुचाते हैं

वह सदा झूठी शान दिखाते हैं|

विचार करने में समय बर्बाद नहीं होता है

कार्य-कुशलता का प्रतिक्षण विकास होता है

असीमित इच्छाओं से बढ़ते है मनो रोग

फिर सोचने लगते हैं हमें क्या कहेंगे लोग ?

'मन की शांति'का सिद्धांत है कर्मयोग

'आलस्य' है जीवन का एक असाध्य रोग

प्रेम के झरने की शक्ति का स्रोत है 'वियोग'

फिर क्यों सोचते हो? हमें क्या कहेंगे लोग?

काम से कोई छोटा-बड़ा नहीं होता है

क्रिया विधिज्ञ बनकर ही सफल होता है

अपने अंतस को एकांत में नित निहारो

क्या कर सकते हो? सोचो और विचारो ।

आवश्यकताओं और इच्छाओं में फर्क होता है

मृग तृष्णा से मानव-मन क्या तृप्त होता है?

क्षमता और कार्य कुशलता है बेहतर संयोग

फिर कभी मत सोचो, हमें क्या कहेंगे लोग

आत्म संतृप्ति से दूर होते तन- मन के रोग

अंतर्द्वंद दूर करो, यही है सबसे बड़ा योग

व्यर्थ में क्यों सोचते हो?'क्या कहेंगे लोग'?

यही है हमारी जिंदगी का सबसे बड़ा रोग ।

बीरपाल सिंह

प्रबंधक – राजभाषा

क्षेत्रीय कार्यालय, कानपुर

****

आजादी का अमृत महोत्सव का महत्व

प्रधानमंत्री मोदी जी ने 12 मार्च,2022 में अमृत महोत्सव की शुरुआत की थी क्योंकि इसी दिन महात्मा गांधी और उनके साथियों ने नमक पर लगाए गए अंग्रेजी हुकूमत द्वारा लगान के विरोध में 'नमक सत्याग्रह' की शुरुआत की थी। अंग्रेजों ने चाय, कपड़ा और नमक पर अधिकार जमाए हुआ था। महात्मा गांधी जी ने इसी के विरोध में यात्रा निकाली थी जो की साबरमती आश्रम से शुरू हुई थी। महात्मा गांधी जी ने 24 मार्च, 1930 दांडी में समुद्र के किनारे नमक बनाकर अंग्रेजों के काले कानून को तोड़ा था। ये यात्रा 24 दिन चली थी जिसमें 80 लोग शामिल थे। 390 किलोमीटर तक चली इस पद यात्रा में हजारों लोग जुड़ गए थे।

अमृत महोत्सव मानने का उद्देश्य

आज भारत का अपना अलग मुकाम है और निरंतर नई–नई उपलब्धता को पार कर रहा है। आज हर क्षेत्र में भारत आगे है पर जब भारत गुलामी की बेड़ियों से जकड़ा था तब इस देश को स्वतंत्र करने के लिए बहुत से सुपूतों ने बलिदान दिया और बहुत कष्ट सहे। परंतु अभी भी बहुत से लोग है जो आजादी के संघर्ष को नहीं जानते और उनके बलिदान की कहानी नहीं पता है इसलिए आजादी के महोत्सव के माध्यम उन सभी लोगों को आजादी के सही मायने बताने बहुत जरूरी है। इस अमृत महोत्सव में उन वीर सुपूतों को याद करना है, जो अपने परिवार और अपना समस्त जीवन केवल देश को समर्पित कर दिया। कवि प्रदीप की रचना के माध्यम से भारत के वीर शहीदों की याद में कुछ पंक्तियां-

"ऐ मेरे वतन के लोगों जरा आंख में भर लो पानी जो शहीद हुए है उनकी जरा याद करो कुर्बानी"

अमृत महोत्सव के कार्यक्रम

आजादी का महोत्सव किसी विशेष जाति, धर्म अथवा राज्य नहीं बल्कि संपूर्ण भारत के लिए महत्वपूर्ण है। अमृत महोत्सव एक राष्ट्रीय महोत्सव है। आजादी का अमृत महोत्सव 75 सप्ताह तक मनाया जायेगा और हर सप्ताह में अलग-अलग कार्यक्रम आयोजित कराए जा रहे हैं और उनके माध्यम से लोगों के मन में देश प्रेम को जागरूक किया जाता है, इस बार आजादी का अमृत महोत्सव 12 मार्च से शुरू हुआ था जो अगले 75 सप्ताह तक चलेगा।

आजादी का अमृत महोत्सव सभी सरकारी संस्थान में धूमधाम से मनाया जा रहा है। कुछ जगहों पर रैलियां भी निकाली जाती है ताकि इस का महत्व लोगों तक पहुंच सके। देश में जितने भी सरकारी भवन है उन सब में राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है। स्कूल के बच्चे सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेते है और अपने कला के माध्यम से आजादी का महोत्सव मानते है। स्कूल में बहुत अच्छे से तैयारी की जा रही है और बच्चों को आजादी के संघर्ष की कहानियां बताई जा रही है। 15 अगस्त 2021 से कार्यक्रम की शुरुआत हो चुकी जिसमें देश के संगीत, नृत्य, प्रवचन और प्रस्तावना पठन शामिल है। इस महोत्सव में देश की संस्कृति को प्रदर्शित करने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए।

आजादी के अमृत महोत्सव में चरखे से लोकल फ़ॉर वोकल को बढ़ावा दिया गया। इसके लिए साबरमती आश्रम में एक चरखा रखा गया है जब कोई व्यक्ति लोकल व्यापारी और कंपनी का सामान खरीदेगा और उसकी तस्वीर सोशल मीडिया पर लोकल फ़ॉर वोकल का टैग लगाकर सोशल मीडिया में डालेगा उसके तुरंत बाद ये चरखा घूमेगा।

आशीष पटेल
एकल खिड़की परिचालक
आंचलिक कार्यालय , लखनऊ